ओ३म्

प्रथमावृत्ति की भूमिका।

प्रिय पाठकगण! साम्प्रदायिक मतों के विशेष प्रचार होने से अधिकांश हिन्दूजन ईश्वरावतार मूर्त्ति पूजा मृतक श्राद्धादि अवैदिक विषयों को धर्म और अष्टादश पुराणों के प्रमाण शून्य असम्भव कथाओं के सत्यमान कर वैदिक पन्थ से पृथक् हो गये हैं। उन लोगों के भ्रम निवारणार्थ कुछ प्रश्न एकत्रित करके यह "प्रश्नाऽर्णव" नामक पुस्तक निर्माण की गई है।

आशा है कि पौराणिक महाशय वेद सच्छास्त्र के प्रमाणों व युक्तियों से प्रश्नों का उचित उत्तर देवें, अन्यथा वैदिकमत को स्वीकार करेंगे।

श्रा० शु० १५। १९६७ वि०। सूर्यदत्तशर्मा।
पचराँव (चुनार)।

विषयाऽनुक्रमणिकाः—

द्वितीयावृत्ति की विज्ञप्ति।

सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा से 'प्रश्नार्णव' की द्वितीया वृत्ति प्रकाशित हो रही है आवश्यकतानुसार संशोधन भी कर दिया गया है तौभी भ्रमवश कहीं कुछ त्रुटि हो तो सज्जन् महाशय सुधार लेंगे। प्रश्न प्रकाशित करने का एकमात्र यही उद्देश्य है कि सर्व महाशय सत्यासत्य का स्वयं निर्णय कर लेवें किसी के चित्त दुःखाने का नहीं। इति॥

भवदीय

वैशाख शु० १५।७१ वि० — सूर्यदत्त शर्मा,
प्रकाशक आर्यज्ञानोदय ग्रन्थमाला,
गुरुकुल काशी।

नमस्ते विषय ॥ १४ ॥

(३५३) नमस्ते करना अर्थात् वैदिक सिद्धान्त है तो तुम लोग नमस्ते न कहकर राम २ राधाकृष्ण सीताराम आदि कहते हो सो क्यों ?

(३५४) क्या सर्व साधारण को नमस्ते कहना अयोग्य है? यदि है तो प्रमाण दो।

(३५५) यदि बड़ों के लिये नमस्ते बोलना अयोग्य मानते हो तो पुराणों में ईश्वर तक को भी नमस्ते कहा गया है सो क्यों ? "नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे। नमस्ते जगत् व्यापिके विश्वरूपे०॥ देवी भागवत॥ नमस्ते वाङ्मनोतीत रूपायानन्तशक्तये॥ सत्यनारायण॥

(३५६) यदि कहो कि ईश्वर के लिये दोष नहीं किन्तु मनुष्यों में अपने से जो बड़े हों उन्हें नमस्ते न करना चाहिये तो अर्जुन ने कृष्ण को नमस्ते कहा है तो क्या कृष्ण जी अर्जुन से बड़े नहीं थे ? देखो गीता॥

(३५७) यदि छोटे के प्रति नमस्ते योग्य नहीं तो सीता ने राक्षसों को नमस्ते की थी सो क्यों? वा० रा०॥

(३५८) स्त्री व पुत्र के लिये नमस्ते कहने की आज्ञा है वा नहीं? यदि है तो तुम उसके विरोधी क्यों? "नमस्ते जायमानाय जाताये उत नमः" अथर्व वेद।१०।१०।१॥

(३५९) गुरु शिष्य को और शिष्य गुरु को नमस्ते कह सके हैं वा नहीं ? यदि नहीं तो क्यों ? पूर्वकाल में गुरु व शिष्य आपस में नमस्ते करते थे सो क्यों ! देखो-कठोपनिषद्॥

आयु विषय ॥ १५॥

(३६०) मनुष्यों की आयु वेदानुसार कितनी है और तुम कितनी मानते हो ?

(३६१) अधिक से अधिक जितनी आयु तुम मानते हो वह वैदिक प्रमाणों से सिद्ध करो ?

(३६२) तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतमित्यादि॥ प्रकार तुम मानते हो वा नहीं ?

(३६३) यदि मानते हो तो पुराणों में करोड़ों व अरबों वर्षों तक मनुष्यों की आयु होना लिखी है सो सत्य कैसे ?

(३६४) राजा प्रियव्रत की कई अरब और राजा पुरुरवा की ६१ हजार तथा मारकंडेय ऋषि की दस करोड़ वर्ष आयु थी सो यदि सत्य है तो प्रमाणों से सिद्ध करो? यदि असत्य हो तो पुराण मिथ्या क्यों नहीं ?

भा० १२।८।११॥ वि० पु० ४।६॥

(३६५) पुराणानुसार कौन २ अमर हैं उनके पतादि से सूचित करो ? और उनके अमर होने का तुम्हारे पास प्रबल प्रमाण क्या है सो बताओ ?

(३६६) श्री रामचन्द्र जी की आयु कम से कम कितनी मानते हो ? यदि ग्यारह हजार वर्ष, तो बताओ उनका विवाह २७ वर्ष में होना योग्य कैसे ? जब कि आयु का चौथा भाग ब्रह्मचर्य से रहना शास्त्र सिद्धान्त है ।

(३६७) यदि सौ वर्ष की आयु श्री रामचन्द्र जी की मानो तो जबकि तुम्हारे ईश्वरावतार ही सौ वर्ष जीये तो अन्यों की आयु करोड़ों, वर्षों की कैसे सिद्ध करोगे ?

हिन्दू नाम विषय ॥१७॥

(३६८) क्या तुम अपने को हिन्दू मानते हो या नहीं यदि हिन्दू मानते हो तो बताओ हिन्दू शब्द संस्कृत भाषा का है क्या ?

(३६९) यदि संस्कृत भाषा का है तो संस्कृत के व्याकरणानुसार हिन्दू शब्द का क्या अर्थ है? और संस्कृत के प्राचीन ग्रन्थों में हिन्दू शब्द कहां लिखा है ?

(३७०) यदि हिन्दू शब्द अन्य भाषा का है तो अन्य भाषाओं में हिन्दू शब्द का जो अर्थ माना जाता है वह तुम अपने को मान सकते हो या नहीं ?

(३७१) हिन्दू शब्द यदि सनातन से है तो महाभारतादि ग्रन्थों में एतद्देश वासियों के नाम हिन्दू आये हैं या नहीं। यदि नहीं तो क्यों ?

(३७२) पूर्व के लोग अपने को आर्य कहते थे वा हिन्दू। यदि आर्य कहते थे तो तुम अपने को हिन्दू क्यों कहते हो ?

(३७३) हिन्दू शब्द यदि पहिले भी था तो श्री रामचन्द्रादि महात्माओं ने अपने को हिन्दू न कहके आर्य कहा था सो क्यों ?

(३७४) इसदेश का नाम आर्यावर्त्त है वा नहीं यदि है तो यहां के निवासी हिन्दू कैसे ? आर्य क्यों नहीं ?

(३७५) "आर्यधर्मेतराणां प्रवेशो निषिद्धः" यह काशी विश्वनाथ जी के मन्दिर में खुदा है, तो जो हिन्दू पंडित आर्य (मत) धर्म का निराकरण करते हैं वे आर्य धर्म के विरोधीजन मन्दिर में कैसे जा सकेंगे ?

(३७६) वेद में द्विजाति को आर्य और शूद्रों को दस्यु लिखा है तो जो लोग आर्य कहना ही पाप समझते हैं वे क्या दस्यु बनना चाहते हैं ?

जप तप विषय ॥ १८ ॥

(३७७) जप शब्द का क्या अर्थ मानते हो ? यदि रामकृष्णादि शब्दों के बारम्बार कहने का नाम जप है तो वैदिक प्रमाणों से सिद्ध करो !

(३७८) राम कृष्णादि शब्द ईश्वर वाचक हैं वा नहीं यदि हैं तो बताओ ये शब्द वेद में ईश्वर विषय में कहां आये हैं ?

(३७९) राम कृष्णादि शब्दों के जपने की आज्ञा वेद में है वा नहीं? यदि नहीं है तो वेद विरुद्ध कर्म के करने से आस्तिक कैसे ?

(३८०) यदि है तो वह वेदमंत्र सायण महीधर भाष्य के सहित लिखो जिस में राम कृष्णादि नाम जपने की आज्ञा स्पष्ट लिखी हो ?

(३८१) जबकि तुम्हारे ईश्वर श्री कृष्ण जी ओम् का जप करना मोक्षदायक बतलाते हैं तो तुम श्री कृष्णजी के विरुद्ध कार्य करने से कृष्णभक्त कैसे ? "ओमित्येकाक्षरंब्रह्म व्याहरन् मा मनुस्मरन् ॥ यः प्रयाति त्यजन्देहं सयाति परमांगतिम् ॥ भ० गी० ८।१३॥

(३८२) धर्मशास्त्रानुसार बतलाओ रामकृष्णादि नाम के जप करने से क्या फल होता है ? यदि नहीं तो व्यर्थ रामनामादि का

माहात्म बतलाकर लोगों को धोखा देते हो सो क्यों? क्या यह तुम्हारी धूर्तता नहीं है।

(३८३) राम कृष्णादि जब उत्पन्न ही नहीं हुए थे तो इनके पूर्व लोग किस नाम का जप करते थे सो बताओ?

(३८४) वेद शास्त्र पुराणादि ग्रन्थों में "ओ३म्" का ही जप करना श्रेय बतलाया है तो तुम लोग वेद शास्त्र पुराणादि के विरुद्ध "राधाकृष्णाभ्यां नमः" को जपने से पूर्ण नास्तिक क्यों नहीं।
ओ३म् खं ब्रह्म॥यजु०॥ तस्मादोमिति प्रणौतिओमिति वै स्वर्गोलोकः॥ ऐ० ब्रा० ॥ तस्य वाचकः प्रणवः। तज्जपस्तदर्थ भावनम्॥ योग दर्शन॥

(३८५) राम और कृष्ण जी किस का नाम लेकर जप करते थे? व लोग ओ३म् को जपते थे वा नहीं।

(३८६) तप किसको मानते हो? क्या भस्म लगाना रुद्राक्ष धारण करना, नख बाल रखना आदि तप है? यदि नहीं तो उक्त कार्यों को पुराणों में तप लिखा है सो क्यों?

(३८७) "ऋतं तपः सत्यं तपः" इत्यादि तप है वा नहीं? यदि है तो भस्म लगाना रुद्राक्ष धारणादि करना व्यर्थ क्यों नहीं?

बालविवाह विषय ॥ १६ ॥

(३८८) विवाह संस्कार कितनी अवस्था में होना योग्य है? यदि बाल्यावस्था में तो इस में वैदिक प्रमाण क्या है?

(३८९) ब्रह्मचर्याश्रमं समाप्य गृही भवेत्॥ शतपथ॥ ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विन्दते पतिम्॥ अथर्व वेद॥ इत्यादि प्रमाणों से सिद्ध है कि स्त्री व पुरुष ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करके गृही बने, जब कि तुम बाल्यावस्था में विवाह मानते हो तो ब्रह्मचर्याश्रम की पूर्ति कैसे होगी?

(३९०) क्या कन्या व बालक बाल्यावस्था में ही मनुवचनानुसार वेदादि को समाप्त कर सके हैं? यदि नहीं तो विना वेदाध्ययन किये विवाह होना योग्य कैसे?

(३९१) क्या आठ वर्ष की कन्या और १० वर्ष का बालक वैवाहिक वैदिक प्रतिज्ञा कर सक्ता है? यदि नहीं कर सक्ता तो वैदिक विवाह क्यों?

(३९२) विवाह के बाद संभोग कितने दिन पर शास्त्रानुसार तुम मानते हो? यदि तीन वर्ष बाद, तो बताओ जबकि कन्या तीन वर्ष तक पिता के ही घर ऋतुमती होती रहेगी तो उसका दोष किसको होगा?

(३९३) ऋतुमती का विवाह करना यदि पाप है तो धर्मशास्त्र के प्रमाणों से सिद्ध करो?

(३९४) बाल्यावस्था में ही विवाह करना यदि सनातन धर्म है तो सीताजी का विवाह युवावस्था में क्यों हुआ था? यदि कहो कि बाल्यावस्था ही में हुआ था तो बताओ "पति संयोग सुलभं वयो-दृष्ट्वातु मे पिता" यह सीता ने अनुसूया से क्यों कहा था? क्या बाल्यावस्था में ही पति संभोग के योग्य थीं।

(३९५) विवाहानन्तर तीन रात्रि के बाद समागम करने की विधि गृह्य सूत्रों में बतलाई है तो कन्या क्या बिना ऋतुमती हुए समागम करने के योग्य हो सकी है?

गोभिल, पारस्कार गृ० सूत्र ॥

(३९६) यदि नहीं तो तुम्हारा बाल्यावस्था का विवाह शास्त्र सिद्धान्त के विरुद्ध क्यों नहीं?

(३९७) द्वात्रिंशद्वर्ष पूर्णेन यदि षोडश वार्षिकी ॥ विंशत्यब्दा यदा कन्या वस्तव्यं तत्र वै ऽप्यहम् ॥ ब्रह्मपुराण ॥ इस पुराण के श्लोक से भी सिद्ध होता है कि १६ वर्ष से न्यून कन्या का विवाह होना अधर्म है अतः तुम पुराण के भी विरुद्ध कार्य करने से पौराणिक कैसे?

(३९८) ऋतुमती कन्या का ही विवाह करना सब शास्त्रकार जबकि श्रेष्ठ मानते हैं तो तुम्हारा "अष्टवर्षा भवेत् गौरी" वाला सिद्धान्त असत्य क्यों नहीं?

(३९९) विवाह क्यों किया जाता है? यदि सन्तानोत्पत्ति के लिये तो बिना पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत के पालन किये क्या सन्तान योग्य उत्पन्न हो सकी है? यदि नहीं तो बाल्यविवाह की क्या आवश्यक्ता

(४००) बाल्यावस्था का विवाह होना यदि श्रेष्ठ है तो प्रत्यक्ष प्रमाणों से बाल्यविवाह की श्रेष्ठता सिद्ध करो?

(४०१) ऐतिहासिक ग्रन्थों के प्रमाणों से बतलाओ कि पूर्व के लोगों का भी विवाह बाल्यावस्था में ही होता था क्या?

(४०२) स्वयम्वर जोकि प्राचीन काल में होता था सो क्या बाल्यावस्था में? यदि नहीं तो तुम उसके विरोधी क्यों?

याज्ञीय हिंसा विषय ॥ १९ ॥

(४०३) अश्व गोमेधादि यज्ञ पुराणानुसार कैसे किये जाते हैं? यदि अश्व गोवधादि करके उनके मांस से हवन करना ही अश्व गोवमेधादि यज्ञ हैं तो वैदिक प्रमाणों से सिद्ध करो?

(४०४) क्या यज्ञार्थ में पशु वध करना धर्म है? यदि धर्म है तो वह वेद मंत्र भाष्य सहित लिखो जिसमें यज्ञार्थ पशुवध धर्म बतलाया हो?

(४०५) हिंसादि दुष्ट कर्मों को क्या वेदों में पाप नहीं बतलाया है? यदि बतलाया है तो पापयुक्त यज्ञादि कर्म धर्म कैसे?

(४०६) यदि तुम वैदिक प्रमाणों से "पशुवध करना धर्म है" ऐसा सिद्ध नहीं कर सके तो वेद विरुद्ध हिंसादि कर्म के करने से पापी क्यों नहीं?

(४०७) जबकि मनुजी प्राणी वध करना नरक का हेतु बतलाकर मांस का निषेध करते हैं तो मांस सम्बन्धी यज्ञ धर्म शास्त्र के विरुद्ध क्यों नहीं? नाकृत्वा प्राणिनांहिंसां मांसमुत्पद्यते क्वचित्। नच प्राणिवधः स्वर्ग्यस्तस्मान्मांसं परिवर्जयेत् ॥ मनु० अ० ५।४८॥

(४०८) यदि कहो कि "यज्ञार्थं पशवः सृष्टा" ॥ इस श्लोक में मनुजी ने यज्ञार्थ पशुवध को अवध कहा है अतः मांस सम्बन्धी यज्ञ धर्म शास्त्र के विरुद्ध नहीं। सो भी ठीक नहीं क्योंकि मांसाहारियों ने बहुत से श्लोक मनुस्मृति में मिला दिये हैं सो वेद विरुद्ध होने से त्याज्य हैं? तो इसका प्रमाण ही क्या?

(४०९) मनुस्मृति के मांस विषयक श्लोकों को क्या तुम प्रक्षिप्त नहीं मानते। यदि नहीं मानते तो जहां लिखा है कि "मधुपर्कादि में जो मांस भक्षण नहीं करता वह २१ बार पशुयोनि को प्राप्त होता है" क्या मधुपर्कादि में मांस न खाने से २१ बार पशुयोनि को प्राप्त होंगे वा नहीं? नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसंनात्तिमानवः। सप्रेत्य पशुतांयाति सम्भवानेक विंशतिम् ॥ मनु० अ० ५।३५॥

(४१०) मृतक श्राद्ध में वाराह, भैंसे, कछुवे आदि के मांस का पिंड पितरों को प्रदान करके तृप्त क्यों नहीं करते? क्या यहां धर्म शास्त्र को नहीं मानोगे?

(४११) यज्ञ में जो पशुवध किया जाता है यदि पुराणानुसार उसको स्वर्ग मिलता है तो पौराणिक महाशय अपने माता पितादि सम्बन्धियों का हवन करके उन्हें स्वर्ग में क्यों नहीं पहुंचा देते।

(४१२) यज्ञार्थ पशुवध पाप नहीं तो मनुष्य वध में पाप क्यों फिर क्या मनुष्य वध करके नरमेधयज्ञ करोगे?

(४१३) गर्दभेज्या यज्ञ करना सनातन धर्म है वा नहीं? यदि है तो सनातनी भाई क्यों नहीं करते। देखो कात्यायन सूत्र १।१।१३।१४॥

(४१४) सनातन धर्म के माननीय आचार्य महीधर जी ने यजुर्वेद भाष्य में अश्वमेधादि का जैसा वर्णन किया है क्या तुम उस को प्रमाणिक मानते हो। यदि मानते हो तो कर सक्ते हो वा नहीं? य० वे० भा० म० कृ० ॥

(४१५) राजा रन्तिदेव ने इतनी गौवें वध करके गोमेध यज्ञ किया था जिसके चर्म से चूचू कर निकले हुए द्रव से चर्मण्यवती नदी हो गई यदि सत्य है तो राजा ने पुराणानुसार पाप किया था वा पुण्य? महाभारत द्रोण पर्व ॥

(४ ६) सर्प बलि करना यदि वैदिक सिद्धान्त है तो वेद मंत्र का प्रमाण दो?

(४१७) श्राद्ध, यज्ञ, अतिथि सत्कार में गौ का मारना क्या वेदानुसार है? यदि नहीं तो सनातनियों के भाष्यकारों ने आपस्तम्ब्यादि सूत्रों में मिथ्या प्रलाप किया सो क्यों?

(४१८) पशुमेधादि यज्ञ व गवालम्भनादि कर्म क्या सतयुगादि का धर्म है? और क्या कलियुग में करना पाप है? यदि है तो ऐसा वेद मंत्र का प्रमाण दो।

(४१९) हिंसायुक्त यज्ञों के करके वालों को वेद में अज्ञानी बतलाया है तो वे अज्ञानी क्यों नहीं? जो पशुमेधादि यज्ञ करते कराते हैं देखो "मुग्धादेवा उतशुना यजन्तोत गोरंगः पुरुधायजन्त" अथर्ववेद ।७।५।५॥

(४२०) क्या बिना अश्वादि के वध किये ये यज्ञ नहीं हो सक्ते? तो इस में वैदिक प्रमाण क्या है सो बताओ?

(४२१) न मांस भक्षणे दोषो न मद्ये न च मैथुने। प्रवृत्तिरेषा भूतानां निवृत्तिस्तु महाफला॥ मनु० ५।५६॥ यदि तुम्हारे मत में मांस भक्षणादि में दोष नहीं है तो क्या अभक्षण करने में दोष है?

(४२२) सौत्रामण्यां सुरां पिबेत्। प्रोक्षितं भक्षयेत् मांसम्॥ क्या यह प्रमाण आप को माननीय है? यदि है तो सौत्रामणि यज्ञ में क्या मद्यपान कर सक्ते हैं?

(४२३) राष्ट्रं वा अश्वमेधः॥ अन्नं हि गौ॥ अग्निर्वा अश्वः॥ आज्यं मेधाः॥ शतपथ॥ इत्यादि शब्दों का क्या अर्थ तुम मानते हो सो लिखो?

(४२४) वर्षे वर्षेऽश्वमेधेन यो यजेत्शतं समाः। मांसानि च खादेद्यस्तयोः पुण्यं फलं समम्॥ मनु० ५।५३॥ इस श्लोकानुसार सौ वर्ष अश्वमेध यज्ञ करने वाला और जो जन्म भर मांस नहीं खाता, यदि दोनों का फल बराबर है तो यज्ञार्थ हिंसा करना धर्म कैसे है?

(४२५) सुराः मत्स्याः पशोर्मांसं द्विजातीनां बलिस्तथा॥ धूर्तैः प्रवर्त्तितं यज्ञे नैतद्वेदेषुकथ्यते॥ महाभारत॥ जबकि महाभारत को सनातनी लोग पंचम वेद मानते हैं तो धूर्तों के चलाए हुए हिंसा युक्त यज्ञों को क्यों मानते हैं?

फलित ज्योतिष विषय॥ २०॥

(४२६) क्या फलित ज्योतिष सत्य है? यदि सत्य है तो वैदिक प्रमाण तथा युक्तियों से सिद्ध करो?

(४२७) सूर्य चन्द्र मंगल बुध आदि ग्रह चैतन्य हैं या जड़? और ये ग्रह आदि मनुष्यों को ही दुःख देते हैं या पशु पक्षियों को भी?

(४२८) यदि मनुष्यों को ही दुःख देते हैं तो क्यों? और ब्राह्मणों को दान देने तथा पूजा पाठ आदि के करने कराने से क्या इनकी शान्ति होती है? वेद मंत्रों के प्रमाणों से सिद्ध करो?

(४२९) यदि कहो कि पशु पक्षियों को भी ग्रह दुःखित करते हैं तो पशु आदि ग्रह शान्ति नहीं कराते तब क्या वे दुःख ही भोगते हैं. इस में प्रबल प्रमाण क्या है?

(४३०) दिशासूल क्या है? और दिशासूल में जाना आना क्यों मना है? दिशासूल में जाने आने से यदि अनिष्ट फल होता है तो प्रमाण क्या है सो बतओ?

(४३१) मुहूर्त्त चिन्तामणि ज्योतिष का ग्रन्थ है वा नहीं? और इसका प्रमाण तुम मानते हो वा नहीं?

(४३२) यदि मानते हो तो मुहूर्त्त चिन्तामणि में मद्य पान, चोरी, आदि करने का मुहूर्त्त बतलाया है सो किस वेद मंत्र के अनुसार है वह मंत्र भाष्य सहित लिखो?

(४३३) यदि वेद मंत्र का प्रमाण नहीं दे सके तो वेद विरुद्ध ग्रन्थों को क्यों मानते हो? क्या यह नास्तिकता नहीं है?

(४३४) जातकाभरण और मानसागरी दोनों ग्रन्थ ज्योतिष के हैं वा नहीं? यदि हैं तो परस्पर विरोध क्यों?

(४३५) सिंह राशि वाले मनुष्य की मृत्यु फाल्गुण सुदी ५ सोमवार को मध्यान्ह समय जल में हो, ऐसा जातकाभरण में लिखा है सो यदि सत्य है तो वेदोक्त प्रमाण दो? फाल्गुणस्य सिते पक्षे पञ्चम्यां सोमवासरे ॥ मध्यान्हे जल मध्ये च मृत्युर्नूनं न संशयः ॥ जा० भ० ॥

(४३६) जातकाभरण के विरुद्ध मानसागरी में यह लिखा है कि "सिंह राशि वाला मनुष्य श्रावण सुदी १० रविवार को फाल्गुणी नक्षत्र में मृत्यु को प्राप्त हो" तो यहां क्या मानना चाहिये? परस्पर विरुद्ध होने से दोनों असत्य क्यों नहीं?

(४३७) राहु और केतु नामक दैत्यों के ग्रसने से सूर्य व चन्द्र का ग्रहण होता है या पृथ्वी की छाया से। सत्य क्या है? लिखो।

(४३८) एक राशि में उत्पन्न हुए सब मनुष्य उसी राशि के अनुसार मृत्यु को प्राप्त होते हैं क्या?

(४३९) विवाह के लिये पारस्कर गृह्य सूत्र में उत्तरा, हस्त, चित्रादि नक्षत्र शुभ बतलाये हैं और शीघ्रबोध में अनुराधा हस्त आदि लिखा है सो क्या माननीय है?

भूत प्रेतादि विषय ॥ २१ ॥

(४४०) भूत, प्रेत, क्या कोई शरीरधारी हैं? यदि हैं तो उनका शरीर भौतिक है या अभौतिक?

(४४१) यदि भौतिक है तो दिखाता क्यों नहीं? और अभौतिक हैं तो उसके अस्तित्व का प्रत्यक्ष प्रमाण क्या है?

(४४२) अकाल मृत्यु जिसकी होती है क्या वे भूत प्रेतादि योनि को प्राप्त होते हैं? इसमें वैदिक प्रमाण क्या है?

(४४३) भूत प्रेतादि मनुष्य योनि के ही क्यों? पशु पक्षी कीट पतंगादि के क्यों नहीं होते?

(४४४) शाकिनी डाकिनी आदि क्या हैं?

(४४५) भूत प्रेतादिकों के क्या स्त्री पुत्रादि भी होते हैं? और ये जीव कब तक इस योनि में रहते हैं क्या निश्चय है?

(४४६) क्या तुमने कभी भूत प्रेतादिकों को साक्षात् किया है? यदि नहीं तो मिथ्या ही कल्पना करके सर्व साधारण को धोखा देते हो सो क्यों?

(४४७) तान्त्रिक ग्रन्थों में भूत उतारने की अनेक विधि व मंत्र लिखे हैं सो क्या सत्य हैं? और उन मंत्रों से उनके क्या सम्बन्ध है सो लिखो?

(४४८) यदि भूत प्रेतादि योनि विशेष कोई नहीं है तो पुराणों का लेख मिथ्या क्यों नहीं?

मुक्ति विषय ॥२२॥

(४४९) तुम्हारे मत में मुक्ति क्या वस्तु है?

(४५०) मुक्ति जीव का स्वाभाविक गुण है वा नैमित्तिक?

(४५१) जीव बन्धन में आने से पूर्व मुक्त था वा नहीं? यदि था तो मुक्ति से पुनरावृत्ति क्यों नहीं हो सक्ती?

(४५२) क्या जीव अनादि काल से बद्ध है? यदि है तो फिर मुक्त कैसे होगा?

(४५३) जब कि तुम्हारे मतानुसार ईश्वर भी बन्ध मुक्त से पृथक् होने पर शरीर धारण करता है तो जीव मुक्ति से बन्धन में क्यों नहीं आसक्ता?

(४५४) मुक्ति यदि साधनों से होती है तो नित्य कैसे ?

(४५५) मुक्ति चार प्रकार की यदि है तो इस में वेद मंत्र का प्रमाण दो ?

(४५६) ईश्वर के लोक में रहने से सालोक्य, सर्वत्र व्याप्त होने से सामीप्य, "द्वासुपर्णा सयुजा सखाया०" मंत्रानुसार सानुज्य और जीव परमात्मा में व्याप्य होने से सायुज्य मुक्ति स्वयं सिद्ध है फिर उपासनादि की क्या आवश्यक्ता है सो बताओ ?

नवीन वेदान्त विषय ॥ २३ ॥

(४५७) जीव और ब्रह्म क्या एक हैं ? यदि हैं तो प्रमाण दो ? क्या सुख दुःखादि ब्रह्म को होता है ? और जीव अल्पज्ञ व ईश्वर सर्वज्ञ है सो क्यों ?

(४५८) क्या ब्रह्मही अविद्या वस जीव हो जाता है ? अविद्या का क्या ब्रह्म के साथ स्वाभाविक सम्बन्ध है वा नैमित्तिक ?

(४५९) यदि स्वभाविक है तो ब्रह्म क्या अज्ञानी है? नैमित्तिक मानो तो ब्रह्म में अज्ञान होने का निमित्त क्या है ?

(४६०) तुम संसार को क्या असत्य मानते हो ? यदि असत्य है तो असत्य पदार्थ का ज्ञान किसको होता है ?

(४६१) जीव ईश्वर एक ही हैं तो उपासनादि को क्या आवश्यक्ता है ?

(४६२) "द्वासुपर्णा सयुजासखाया" इस ऋग्वेद मंत्र का क्या अर्थ मानते हो ?

वेद ब्राह्मण विषय ॥ २४ ॥

(४६३) क्या ब्राह्मणग्रन्थ भी वेद हैं ? यदि हैं तो वेद और ब्राह्मण दो नाम क्यों ? जैसे ऋगादि ग्रन्थों के साथ वेद शब्द का प्रयोग है वैसेही शतपथादि के साथ क्यों नहीं ?

(४६४) क्या ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों की टीका वा व्याख्यान नहीं ? यदि हैं तो क्या मूल व टीका दोनों की संज्ञा एक हो सक्ती है ? क्या अष्टाध्यायी की टीका महाभाष्य को भी अष्टाध्यायी मान सके हो ?

(४६५) वेद और ब्राह्मण दोनों एक हैं तो "द्वितीयाब्राह्मणे"

२।३।६०॥ सूत्र से "चतुर्थ्यर्थे बहुलंछन्दसि" २।३।६२॥ सूत्र में अनुवृत्ति आही जाती, पुनः छन्दसि ग्रहण करने की क्या आवश्यक्ता थी? और "छन्दो ब्राह्मणानि च तद्विषयाणि" सूत्र में छन्द और ब्राह्मण दोनों का ग्रहण क्यों?

(४६६) तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः ऋचः सामानि जज्ञिरे० यजु० के मंत्रानुसार ऋग्वेदादि वेद ईश्वरोक्त हैं। और शतपथादि ब्रा० ग्रन्थ याज्ञवल्क्यादि ऋषि प्रोक्त हैं तो ब्राह्मण ग्रन्थ वेद कैसे?

(४६७) पतंजलि ऋषि महाभाष्य में "गौ अश्व पुरुष ब्राह्मण आदि को लौकिक और" शन्नोदेवी० ॥ इषे त्वोर्जेत्वा ॥ अग्निमीले पुरोहितम् ॥ अग्न आयाहि वीतये ॥ को वैदिक लिखा है तो ब्राह्मण शब्द लौकिक क्यों नहीं?

(४६८) तेषामृग्यत्रार्थवशेन पाद व्यवस्था ॥ गीतिषु सामाख्या॥ आदि मीमांसा के सूत्रानुसार ऋग्वेदादिही वेद हैं ब्राह्मण ग्रन्थ नहीं फिर तुम क्यों मानते हो?

(४६९) वेद में इतिहास नहीं और ब्राह्मण ग्रन्थों में इतिहास है अतः वेद ब्राह्मण पृथक् क्यों नहीं?

(४७०) व्याकरणी लोग अष्टाध्यायी के सूत्रों को "छन्दोवत्सूत्राणि भवन्ति" कहते हैं तो क्या व्याकरण को भी वेद मान लोगे?

पुराण विषय ॥ २५ ॥

(४७१) भागवतादि अष्टादश ग्रन्थों की पुराण संज्ञा है या नहीं यदि है तो प्रमाण दो?

(४७२) भागवतादि ग्रन्थों के पूर्व कोई पुराण के ग्रन्थ थे या नहीं? यदि थे तो उन्हें पुराण न मानकर इन्हें पुराण मानते हो सो क्यों?

(४७३) यदि नहीं थे तो ब्राह्मणादि ग्रन्थों में पुराण संज्ञा किन ग्रन्थों के लिये आई है सो लिखो?

(४७४) भागवतादि ग्रन्थ व्यासकृत हैं तो परस्पर विरोध क्यों? और क्या वे ग्रन्थ वेदानुसार हैं? यदि हैं तो वेद विरुद्ध असत्य व अधर्म की बातें लिखी हैं सो क्यों?

(४७५) राजा प्रियव्रत का सूर्य के आसपास भ्रमण करना और उनके रथ की लीक से समुद्र का बनना क्या सत्य है?॥ भा०स्कं० ५॥

(४७६) यदि सत्य है तो बताओ क्या पहिले समुद्र नहीं था? और जब कि रथ आकाश में चलता था तो पृथ्वी पर समुद्र कैसे बना?

(४७७) समुद्रा दर्णवादधि सम्वत् सरो अजायत्० ॥ इस यजुर्वेद के मंत्र से विरोध है वा नहीं? यदि है तो पुराण का लेख सत्य कैसे?

(४७८) राजा परीक्षित को काटने के लिये सर्प का ब्राह्मण रूप से आना और कश्यप ऋषि को धनका लोभ देकर राजा के यहां जाने से रोकना क्या सत्य है? क्या उस समय के सर्प भी मनुष्य का रूप धारण करते थे? देखोः—वृद्धब्राह्मणवेषेण तक्षकः पथिनिगतः ॥ अपश्यत् कश्यपं मार्गे व्रजन्तं नृपतिम्प्रति वित्तं गृहाण विप्रेन्द्र यावदिच्छसि पार्थिवात्॥ ददामि सगृहं याहि सकामोऽहं भवाम्यतः॥ देवी भागवत ॥ २।१०।२।१७ ॥

(४७९) मछरी से मत्स्यगन्धा की उत्पत्ति होना क्या सृष्टि नियमानुकूल है? दे० भा० २।१॥

(४८१) एक दैत्य ने महिषी से सम्भोग किया जिस से महिषासुर उत्पन्न हुए सो सत्य कैसे? ॥ दे० भा० ॥

(४८१) कपिल मुनि के नेत्र खोलने से ६०००० साठहजार मनुष्यों का भस्म होजाना क्या सम्भव है? भा० ९।८।१२ ॥

(४८२) शुक्रजी के बुलाने पर मरा हुआ कच का भेड़िये के पेट से आकर वार्त्ता करना क्या युक्त है? ॥ मत्स्य पु० अ० १२५॥

(४८३) गरुड़ जी का सर्प भक्षण करना और उनके पेट में से ब्राह्मण का बोलना क्या तुम सत्य मानते हो।

(४८४) शिखंडिनी स्त्री रूप से पुरुष और राजा सुद्युम्न पुरुष रूप से स्त्री हो गये थे सो क्या सत्य है? यदि है तो प्रमाणों से सिद्ध करो? महाभारत उद्योग प० अ० १९८॥ भा० स्कं० ५ अ० १॥

(४८५) पार्वती के मैल से गणेश जी की उत्पत्ति और शिवजी के विवाह में गणेश पूजन क्या सत्य है.? शिव पुराण।

(४८६) गुरु के क्रोधित होने पर याज्ञवल्क्यजी ने यजुर्वेद का

वमन कर दिया जिसको मुनियों ने तीतर का रूप धरके ग्रहण कर लिया तो बताओ मंत्र क्या कोई ऐसी वस्तु है जो वमन हो सके? और मनुष्य क्या तीतर बन सक्ता है?॥ देवरात सुतः सोऽपिच्छर्दित्वा यजुषां गणम् ॥ ततोगतोऽथमुनयोददृशुस्तान्यजुर्गणान् ॥ यजूंषि तित्तिरोभूत्वा तल्लोलुप तयाऽऽददुः ॥ तैत्तिरीया इति यजुःशाखा आशन्सुपेशलाः ॥ भा० १२॥६॥६४॥६५॥

(४८७) मनु की नाक से इक्ष्वाकु का जन्म होना क्या सम्भव है? क्या नाक में इक्ष्वाकु भरे पड़े थे? भा० ९।६।४॥

(४८८) वशिष्ठ जी का कलसे से उत्पन्न होना क्या सम्भव हो सक्ता है?॥ विष्णु पु० ५।४॥

(४८९) रोमों की राह से वृक्षों में गर्भ का जाना और उनसे सन्तानोत्पत्ति होना क्या तुम सिद्ध कर सक्ते हो? यदि नहीं तो पुराण को मिथ्या क्यों नहीं मानते? वि० पु० १।१५॥

(४९०) एक २ स्त्री को एक २ अर्बुद सन्तानों का होना सत्य है क्या? "एकैकस्या भवत्तेषां राजन्नर्बुदमर्बुदम्" भा० ४।२८।३१॥

(४९१) श्रीकृष्णजी की प्रत्येक स्त्री को दस सन्तानोत्पत्ति होना यदि सत्य है तो बताओ, जबकि उनके १६१०८ स्त्रियां थीं तो क्या एक लक्ष के उपरान्त बालक हुए थे? एकैकशस्ताः कृष्णस्य पुत्रान् दश दशाऽबलाः ॥ अजीजनन्ननवमान् पितुःसर्वात्म सम्पदा ॥ भा० १० ॥६१॥१॥

(४९२) अट्ठारह हजार योजन चौड़ा, छप्पन हजार योजन लम्बा और एक लाख योजन ऊँचाई का यदि सुमेरु पर्वत है तो उसका पता बताओ? भवि० पु० पू० अ० १२० ॥

(४९३) सूअर का दान करना यदि मोक्षदायक है तो पौ० लोग दान क्यों नहीं करते? भविष्य पु० ॥

(४९४) ब्रह्मा ने सृष्टि कर्ता होकर भी असुरों के डर से महाकाली की प्रार्थना की सो क्यों? दुर्गापाठ ॥

(४९५) ब्रह्मा ने असुर रचा और असुरों ने कामान्ध हो ब्रह्मा से ही विषय भोग करने के लिये दौड़े. सो क्या सत्य है? यदि सत्य है तो उस समय भी प्रकृति के विरुद्ध कार्य होता था क्या? भा० ३।२०।२३।२४ ॥

(४९६) ब्रह्मा क्या असुरों का नाश नहीं कर सक्ते थे? यदि नहीं कर सक्ते थे तो सृष्टि उत्पत्ति कैसे की और कर सक्ते थे तो ईश्वर से स्वरक्षार्थ प्रार्थना की सो क्यों? भा० ३।२०॥२६॥

(४९७) ब्रह्मा ने देवता होकर भी स्वपुत्री से ही विषय करने की इच्छा की सो क्यों? वाचं दुहितरं तन्वीं स्वयम्भूर्हरतींमनः ॥ अकामां चकमे क्षत्तः सकाम इतिनः श्रुतम् ॥ भा० ३।१२॥२७॥

(४९८) ईश्वर की आज्ञा से ब्रह्मा ने स्वशरीर को परित्याग कर दिया जिससे भूत प्रेत आलस्यादि उत्पन्न हुए सो क्या सत्य है? भा० ३।२०॥३९॥

(४९९) देवी की कृपा से ब्रह्मा पुरुष रूप से स्त्री होगए, थे यदि सत्य है तो फिर ब्रह्मा सृष्टि कर्त्ता कैसे? देवी भागवत॥

(५००) ईश्वर ने ब्रह्मा को वर दिया था कि तुम कभी मोह को प्राप्त न होगे, तो ब्रह्मा ने मोह वस वत्स हरण किया सो क्यों? ॥ भवान कल्पविकल्पेषु न विमुह्यति कर्हिचित् ॥ भा० २।९॥३६॥

(५०१) दमनक वृक्ष की सुगन्धि से स्त्रियां जब कामवश हो गईं तब ब्रह्मा ने क्रोध से वृक्ष को शाप और वृक्ष के प्रार्थना करने पर वर दिया, क्या युक्त है। भविष्य पु० उ० १३१॥

(५०२) विष्णु भगवान ने वृन्दा का पातिव्रत धर्म नष्ट किया सो क्यों? क्या यह पाप नहीं। यदि है तो विष्णु ने क्या अपने पाप का प्रायश्चित्त किया?। का० मा० १६।२४॥

(५०३) छली कपटी को तुम पापी मानते हो वा नहीं। यदि मानते हो तो तुम्हारे ईश्वर विष्णु भगवान ने दैत्यों के साथ छल किया सो क्यों॥ भा० १०।उ०।८८।३२॥

(५०४) तुलसी के पति को हनन करके क्या लाभ उठाया सो बताओ। छलेन धर्म भगेन मम स्वामी त्वयाहतः॥ देवी भा० ९। ४२।२४।

(५०५) विष्णु के कान से मधुकैटभ असुर उत्पन्न हुआ और उसी से विष्णु भगवान ने पांच हजार वर्ष तक युद्ध किया जब वह नहीं मरा तब उसने असुरों से वर मांगा जिस से वह मरा सत्य है तो क्या इससे विष्णु भगवान की निर्बलता सिद्ध नहीं होती है जो वर मांगा? दुर्गापाठअ० १॥

(५०६) शिवजी से विष्णु या विष्णु से शिव उत्पन्न हुए क्या सत्य है सो बताओ? दुर्गापाठ ॥ ॥

(५०७) शिवजी भक्तों की स्त्रियों से आलिंगन करते थे सो क्यों। क्या देवताओं के यही कार्य हैं। विह्वला विस्मिताश्चैव समाजग्मुस्तथापुनः॥ आलिङ्गन्स्तदा चान्याः करं धृत्वा तथापराः॥ शिव पु० ज्ञान सं० अ० ४२॥१२॥

(५०८) जुआ खेलना धर्म है वा अधर्म? यदि अधर्म है तो शिवजी जुआ क्यों खेलते थे? पद्म पु० उ० खं० १२४।२७॥

(५०९) शिवजी का ऐसा वर देना जिसके भय से आपही भागते फिरना क्या सत्य है? भा०द०उ०ख०८८॥

(५१०) वशीकरण, मारन, मोहन, उच्चाटन, आदि क्या सत्य हैं? यदि हैं तो वेदोक्त प्रमाणों से सिद्ध करो। गरुड़ पु० १८५।१५।१७॥

(५११) सूर्य भगवान का विवाह होना यदि सत्य है तो सिद्ध करो?

(५१२) सूर्य की स्त्री अपनी छाया को स्त्री रूप बना कर वन को चली गई किन्तु सूर्य को इसका ज्ञान नहीं हुआ सो क्यों?

(५१३) जब ज्ञात हुआ कि मेरी स्त्री घोड़ी बनकर वन में विचर रही है तो आप ने घोड़ा का रूप धरके उस से वन में विहार किया सो क्या सम्भव है? भविष्य पु०

(५१४) चन्द्रमा गुरुदाराभिगामी होकर भी पतित क्यों नहीं हुआ? भा ९।१४॥

(५१५) इन्द्र जी हिरण्यकश्यप की गर्भवती स्त्री को व्यभिचारार्थ उठा ले गये सो क्या धर्म कार्य किया था? नृसिंहपु० अ ४२॥

(५१६) जब कि ऋषियों की आज्ञा से इन्द्र ने वृत्रासुर का वध किया तब ब्रह्महत्या क्यों लगी? भा० ६।१३॥

(५१७) इन्द्र ने अश्वमेध यज्ञ में अश्व चुराने के लिये कई प्रयत्न किये थे सो क्या यह देवताओं के कार्य हैं? भा० ४।१९।२३॥

(५१८) सृष्टि तत्त्वादि जब उत्पन्न हुए ही नहीं थे तब ब्रह्मा और विष्णु के झगड़े में गाय और केतकी वृक्ष ब्रह्मा की साक्षी देने के लिये कहां से आ गये सो लिखो? शिव पुराण।

—:*:*:—

भगवान् धन्वन्तरि का वचन

ईश्वरावतार भगवान् धन्वन्तरि ने, जिन्हों ने कि बहुत प्राचीन समय में अपने सुश्रुत आदि शिष्यों को आयुर्वेद शास्त्र का उपदेश दिया था, स्पष्ट कहा है कि "बलवतः सर्वक्रियाप्रवृत्तिस्तस्माद्बलमेव प्रधानम्।" अर्थात् बलवान् मनुष्य ही कर सक्ता है इस लिये बल ही मुख्य है।

रोगी असल में बलवान् होता है उसका इलाज करने में वैद्य को यश मिलता है वैद्य के यश को एक ओर रक्खो तब भी जो रोगी बलवान् होता है वह रोगों से दबता दुःखित नहीं होता है, और सुख से जीता रहता है इस पर से क्या बल की कम आवश्यक्ता मालूम पड़ती है।

मनुष्यमात्र को दीर्घायु भोगने के लिए, किसी भी रोग के साम्हने ठहर सकने के लिए, उद्योग में सफल होने के और सब तरह से सुखी रहने के लिए बल की जब बहुत ज़रूरत है तब उसके साथ बल देने वाली किसी ख़ास वस्तु का ज्ञान होना भी उसके लिये कम ज़रूरी नहीं है जान लीजिये कि आतंकनिग्रह गोलियां बल देने में अद्वितीय हैं मूल्य—३२ गोली की डिब्बी १ का रु० १)

पपरमेएट पूदीना व बड़ी शोपका अर्क फी शीशी ६ आने ।

❀ आर्य्य ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के नियम ❀

(१) उद्देश्य—वैदिक धर्म शिक्षार्थ व आर्ष ग्रन्थों के प्रचारार्थ प्राचीन और नवीन ग्रन्थों को सर्व साधारण के उपकारार्थ प्रकाशित करना है॥

(२) इसके प्रत्येक भाग का मूल्य ≈) और वार्षिक १।) रुपया तथा विद्यार्थियों से अर्द्धमूल्य ॥≈) लिया जाता है॥

(३) यह ग्रन्थमाला ३२ पेज में छपकर प्रति दूसरे मास प्रकाशित होती है॥

(४) जो सज्जन सहायतार्थ ५) रु० देंगे उनको ग्रन्थ माला एक वर्ष विना मूल्य दी जायगी तथा उनका नाम " सहायक श्रेणी " में वर्ष भर बराबर छपता रहेगा॥

(५) जो महाशय वैदिक सिद्धान्त की पुस्तकें ग्रन्थमाला में प्रकाशित कराना चाहेंगे तो प्रकाशित भी की जायगी।

"धार्मिक उत्तम पुस्तकें मँगाकर अवश्य पढ़िये"

(१) वैशेषिक दर्शन भाष्य—शङ्कासमाधान सहित उत्तम व्याख्या युक्त मूल्य ।≈) मात्र।

(२) धर्मोपदेश रत्नमाला दो भाग—इसमें ईश्वर, धर्ममहिमा, धर्म के दश लक्षण धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रियनिग्रह, विद्या, सत्य, अक्रोध और अहिंसा, वर्णव्यवस्था, चातुर्वर्ण्यधर्म, यज्ञोपवीत, ब्रह्मचर्य, विवाहकाल निर्णय, पुनर्विवाह, नियोग आदि उपयोगी ३० विषयों की व्याख्या स्मृतियों के प्रमाणों द्वारा उत्तमता से की गई है। प्रत्येक धार्मिक पुरुष के पढ़ने योग्य मूल्य ।≈) मात्र है।

(३) वैदिक विज्ञानमाला—इसमें ईश्वर, जीव, प्रकृति, सृष्टि उत्पत्ति मृत्यु, पुनर्जन्म, वैद्यक, ज्योतिषादि २० अज्ञेय वैज्ञानिक विषयों का वर्णन वेदमन्त्रों द्वारा भाषायुक्त किया गया है मूल्य ≈) मात्र।

(४) वेद पुराण की शिक्षा—अर्थात् वैदिक पौराणिक सिद्धान्तों की तुलना, मूल्य ≈)

(५) ईश्वर निराकार निरुपण मू० ।)

(६) संस्कृत प्रवेशिका—पं० तुलसीराम जी के समान उत्तम संस्कृत शिक्षा की पुस्तक है मू० ≈)

पता—मैनेजर आर्य ज्ञानोदय गुरुकुल काशी।

आवश्यक सूचना।

जिन सज्जनों के पास ग्रन्थ-माला नियमानुसार जाती है वे कृपया मूल्य भेज दें, वा वी० पी० भेजने की आज्ञा दें और जो न लेना चाहें वे पुस्तक को ही अवश्य भेज दें अन्यथा ग्राहक समझ कर वी० पी० भेजा जायगा जो स्वीकार करेंगे॥ विनीत—

सूर्यदत्तशर्मा, प्रकाशक आर्यज्ञानोदय,
गुरुकुल काशी।